शिक्षा में यथार्थवाद

यथार्थवाद शब्द की उत्पत्ति

यथार्थ अंग्रेजी भाषा के शब्द Realism का हिंदी रूपांतर है।Real शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के Res शब्द से मानी जाती है जिसका अर्थ वस्तु है। Realism का अर्थ वस्तु संबंधी विचारधारा से है।

रास के अनुसार -यथार्थवाद यह मानता है कि जिन वस्तुओं को हम प्रत्यक्ष रुप में अनुभव करते हैं उनके पीछे उन जैसी ही वस्तुओं का एक यथार्थ जगत है।

यथार्थवाद के रूप

1-सरल यथार्थवाद

2-नव यथार्थवाद

3-मानवतावादी यथार्थवाद

4-आलोचनात्मक यथार्थवाद

यथार्थवाद के मूल सिद्धांत

1-यह भौतिक संसार ही सत्य है।

2-ज्ञान प्राप्ति के द्वार है इंद्रिया

3-आंगिक सिद्धांत

4-पारलौकिक जगत नहीं है

5-सुख समृद्धि के लिए वस्तु जगत का ज्ञान जरूरी है।

6-वर्तमान एवं व्यवहारिक जीवन पर बल

यथार्थवाद और शिक्षा के उद्देश्य

1-बालक का सर्वांगीण विकास करना

2-इंद्रिय प्रशिक्षण और विकास

3-पर्यावरण के साथ अनुकूलन करना

4-निरीक्षण और प्रयोग पर बल

5-व्यावसायिक शिक्षा पर बल

6-स्मरण विवेक और निर्णय आदि मानसिक शक्तियों का विकास

यथार्थवाद और पाठ्यक्रम

मातृभाषा को महत्व देना

व्यवहारिकता पर बल

वैज्ञानिक विषयों को प्रमुखता प्रदान

जीवन को सुखी और सफल बनाना

पाठ्यक्रम में प्राकृतिक घटनाओं को प्रधानता

यथार्थवाद और शिक्षण विधियां

हरबर्ट स्पेंसर द्वारा प्रतिपादित निम्न शिक्षण सूत्र है-

1-सरल से जटिल की ओर बढ़े

2-ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़े

3-स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़े

4-प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष की ओर

5-स्व शिक्षा एवं आत्मविश्वास पर बल

यथार्थवाद और शिक्षक की भूमिका

यथार्थवाद में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है । शिक्षक के प्रशिक्षण पर बल दिया गया है । शिक्षक को यह जानना चाहिए कि किस को किस समय तथा कितना पढ़ाना है।

यथार्थवाद और अनुशासन

जॉन लॉक मानसिक अनुशासन पर जोर देता है।

स्पेंसर के अनुसार नैतिक अनुशासन के सच्चे सिद्धांतों एवं प्रयोगों को प्रकृति सरल ढंग से प्रकट करती है।

यथार्थवाद के गुण

1-यथार्थवादी समाज के प्रत्येक वर्ग एवं जाति के लिए शिक्षा की व्यवस्था किए जाने की बात करते हैं।

2-वातावरण से समायोजन स्थापित करने वाले अनुशासन को महत्व देते हैं।

3-शिक्षा व्यवहारिक शिक्षा पर आधारित होनी चाहिए।

4-बालकों की शिक्षा में इंद्रिय प्रशिक्षण पर विशेष जोर देते हैं।

5-यथार्थवादी शिक्षा में व्यवसायिक एवं प्राविधिक विषयों को स्थान देते हैं।

<u>यथार्थवाद के दोष</u>

1-भौतिक जगत से संबंधित जिज्ञासाओं के उत्तर देने में अक्षम

2-कला संगीत साहित्य आदि विषयों को उचित महत्व नहीं

3-आध्यात्मिकता, आत्मा ,परमात्मा के अस्तित्व को नकारना

4-आदर्श पर अविश्वास

5-इसमें धर्म और नैतिकता को कोई स्थान प्राप्त नहीं